फरीदाबाद
मजदूर समाचार
अनुभवों तथा विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.in >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद – 121001

***नई सीरीज नम्बर* 348** *1/-* ***जून* 2017**

हमारे बीच में कवि बहुत हैं

यार नये ग्रेड के लिये नाटक बहुत कर रहे हैं।

क्या बोल रहे हैं ?

(15-20 जनों का ग्रुप बन चुका था।)

बोलते हैं कोर्ट से स्टे है।

हर वक्त की तरह पहले झूठ से शुरू करते हैं। फिर बोलेंगे कि जब सब देंगे तब हम देंगे। फिर कहेंगे फैक्ट्री यहाँ बन्द हो जायेगी और दूसरी जगह ले जायेंगे।

मेरा कहना यह है कि एन सी आर का एक ग्रेड होना चाहिये। फिर उनकी भागमभाग कम हो जायेगी।

(ग्रुप बढ कर 30-35 का हो गया था।)

अब मेरा यह कहना है कि सब तीन दिन छुट्टी करते हैं। मैं तो कहूँ छुट्टी करो , खाओ-पीओ मौज करो, खूब मिलो एक-दूसरे से , परिवारों को ले कर रास्तों में सैर करो , रात को ढोल बजाओ और नाचो-गाओ। तीन दिन में सब को नया ग्रेड देने लगेंगे।

(बढते ग्रुप में सहमति , हँसी , कोलाहल।)

यह अपने आप में एक अद्भुत दृश्य होगा। हम पाँच लाख, हमारे परिवार पूरे इन्डस्ट्रीयल एरिया को बन्द कर छुट्टी मनायें , जश्न मनायें , उल्लास में रहें और नतीजा है मैनेजमेन्टों में दहशत।

ऐसे माहौल जगह-जगह बनते रहते हैं पर आपकी यह पाँच लाख परिवारों की बात तो अखाड़ा ही बदल देती है।

पन्द्रह-बीस लाख लोग रात को जाग रहे हैं , गा रहे हैं । वाह !!

(ग्रुप अब तक बहुत बड़ा हो चुका था।)

पिछली बार का नया ग्रेड कुछ साल पहले आया था तो अपने आप तो कम्पनियों ने लागू नहीं किया था।

हाँ , हमारे ब्लॉक में पाँच फैक्ट्रियों में तो एक साथ काम बन्द किया तब ग्रेड लागू हुआ था।

कितनी ही फैक्ट्रियों में अन्दर जा कर बैठे थे।

सुनो ! तीस साल से काम कर रहा हूँ। ग्रेड हो चाहे और कुछ , देते कोई नहीं हैं , लेने होते हैं। लेनेवालों जैसी बात करो।

मैं आप सब के सामने कुछ मेरी यादें ताजा करना चाहता हूँ।

अब आप कितनी पुरानी यादें ताजा करना चाहते हो?

ज्यादा पुरानी नहीं हैं बहन। दो साल पहले की हैं, 2015 की। शायद आप लोगों को याद भी हैं। फरवरी का महीना। फुल स्वैटर छोड़ कर हाफ स्वैटर में आ चुके थे। चेहरे खुले थे। वसन्त की महक चारों तरफ।

दादा , आप तो कवि हो । याद कर रहे हो या कल्पना में हो।

हा-हा !! याद और कल्पना का संगम है यह। माहौल बहुत अच्छा हो गया था। बात पाँच घण्टे से शुरू हुई थी। खूब मजा आया। मैनेजर और डायरेक्टर फैक्ट्रियाँ छोड़ कर भाग गये थे। सिपाही भी वसन्त में मगन थे।

दादा , याद आ गई हमें भी। उसी माहौल में हम पले। फैक्ट्रियों में मैनेजरों-सुपरवाइजरों की गाली-गलौज बन्द पाई थी हमने। काम शुरू ही किया था और सुनने में आया था कि ऐसा माहौल कभी-कभी बनता है।

मेरे नौजवान साथी। यह माहौल बनता है। फिर टूटता है। फिर बनाना पड़ता है।

यहाँ पर मेरी एक बात पर गौर कीजिये। टारगेट और टारेग बढाना निरन्तर है। मैनेजमेन्ट इसलिये मैनेजमेन्ट है। कोई अपने आप से , अपने मन से , अपनी बुद्धि से अपना शोषण तो बढाने से रहा। इसलिये गालीगलौज बार-बार आ जाती है। इसलिये ये बार-बार बनाना पड़ता है। माहौल।

(पचास-साठ के इस ग्रुप का माहौल उत्तेजना और गम्भीरता में झूल रहा था।)

यह बात आज मैं रात की बस में ले जाऊँगा।

रात की बस ! कौनसी बस में चढते हो ?

हम सब की अपनी-अपनी बस हैं। रूट अलग-अलग हैं , टोलियाँ अलग-अलग हैं। लेकिन साथी, चर्चायें, बहसें , गीत और कविता आड़ी-तिरछी होती सब रूटों से , सब टोलियों से गुजरती हैं। आजकल टेम्परेरी ड्राइवरों-कण्डक्टरों की हड़ताल के कारण हमारी बस में हमारी टोली बहुत बड़ी हो गई है। बहुत-ही मजा!

यहाँ पर खड़े हो कर ऐसा लग रहा है जैसे कि तीन-चार में शुरू हुई बातचीत दस-पन्द्रह , तीस-चालीस , पचास-साठ , तीन सौ , सात सौ होते हुये कितनी तेजी से लाखों में बहने लगती है।

और , हर कथावाचक , हर वर्णनकर्ता , हर बयान करने वाली , हर टोकने वाला , हर विरोधी , हर भिन्नमतावलम्बी , और हर कवि छाप छोड़ते हैं , घना करते हैं , गति बदलते हैं , घुमाव लाते हैं , और नई ऊर्जा देते हैं। यह माहौल है।

इन मौकों में ये माहौल अपने परिचय देते हैं। लाखों की साँसों की ऊष्मा को महसूस कराते हैं और कल्पनाओं को बेलगाम कर देते हैं।

हमारे बीच कवि बहुत हैं।

कई बातें कईयों में बातचीतों में

दिल्ली में ओखला औद्योगिक क्षेत्र हो , चाहे गुड़गाँव में उद्योग विहार , या आई एम टी मानेसर , या फिर फरीदाबाद हो , बातचीत में कई फैक्ट्रियों के मजदूर शामिल हो जाते हैं और अनेक प्रकार की बातें होती हैं । लेकिन मजदूर समाचार में हम आमतौर पर फैक्ट्री-विशेष के आधार पर विवरण देते रहे हैं । ओखला में फरवरी 2013 और उद्योग विहार में फरवरी 2015 में हुई व्यापक बातचीत की झलक हम अवश्य दे पाये थे ।

अकेले-दुकेले में भी , रोने-धोने में भी बातें जारी रहने पर कई तरह की चर्चा और कई जगह के उदाहरण बातों में आते हैं । व्यापकता प्रत्येक में है । एकमेव और एकमय के इस दौर में , in this era of unique and together , सात अरब मनुष्य तो प्रस्थान-बिन्दू हैं । पृथ्वी पर और अन्तरिक्ष में जीव तथा निर्जीव के तौर पर परिभाषित सब एक-दूसरे से घनिष्ठता से जुड़े हैं । प्रत्येक का अस्तित्व दाव पर लग जाना एक बात है । अधिक महत्वपूर्ण है होने का अर्थ और उत्सव , जीवन में आनन्द ।

कईयों के बातचीत में शामिल होने पर जो होने का , एक व अनेक होने का अर्थ और खुशी , प्रसन्नता , आनन्द तथा जानकारियाँ एवं प्रेरणायें मिलती हैं उन्हें हम यहाँ प्रस्तुत करने की कोशिश कर रहे हैं ।

शनिवार , 6 मई को ***एस आई एस सेक्युरिटी*** (कारपोरेट ऑफिस ए-28, 29 ओखला फेज-1, दिल्ली) के 300 गनमैन और 140 ड्राइवरों ने नया ग्रेड लागु करवाने के लिये हड़ताल की.... ***कैपिटल रेडियो*** (बी-6/4 ओखला फेज-2) मजदूरों ने अप्रैल की तनखा नये ग्रेड अनुसार ली और मार्च का एरियर भी लिया.... ***एलकन*** (एफ-1/6 ओखला फेज-1) मजदूरों से मैनेजमेन्ट ने कहा है कि सब्र करो , नया ग्रेड देंगे..... कारब्युरेटर बनाती ***पैको*** (डी-31, 32, 33 ओखला फेज-1) फैक्ट्री मैनेजमेन्ट ने सरक्युलर माँगा , मजदूरों ने ला कर दे दिया , साहब बोले यह तो ऐसे ही है , इस पर 8-9 महीने से रोज 16 घण्टे ड्युटी कर रहे 300 मजदूरों ने 8 मई से ओवर टाइम बन्द कर दिया......

युवा : ***गुडईयर टायर*** फैक्ट्री में थे , अब ***लखानी शूज*** में हैं. ..... ***डिस्पोसेफ मेडिकिट*** में था , अब ***भूपेन्द्रा स्टील कास्टिंग*** में हूँ......ओखला में थे । फैक्ट्री नोएडा ले गये । हम लोग गोविन्दपुरी में यूनियन के पास गये । प्रत्येक से 200-200 रुपये लिये और फिर हिसाब में भी लीडर खा गये । अब फरीदाबाद में ***वमानी ओवरसीज*** में लगा हूँ । कहीं यहाँ तो ऐसा नहीं है ?

दो घण्टे केले की रेहड़ी लगाता हूँ और फिर साढे आठ से फैक्ट्री में ड्युटी करता हूँ...... ऑटो ड्राइवर : पहले ***कम्पारी एक्सपोर्ट*** फैक्ट्री में था. ... वर्दी में वरकरों से पूछा : ***फ्रिक इंडिया*** में परमानेन्ट हो क्या ? नहीं । टेम्परेरी हैं । जिन्हें फैक्ट्री में काम करते 5 साल हो जाते हैं उन्हें वर्दी देते हैं । वैसे दस साल से काम कर रहे मजदूर भी टेम्परेरी हैं । यूनियन ने फरवरी में डिमाण्ड नोटिस दिया और लीडरों ने बताया कि इस बार टेम्परेरी की बात नहीं हैं , एम डी से बात हुई है , 2019 के डिमाण्ड नोटिस में यूनियन टेम्परेरी वरकरों की बातें रखेगी । और , रिटायरमेन्ट के नजदीक फ्रिक इंडिया के एक परमानेन्ट मजदूर ने कहा कि यूनियन के 60 मेम्बर हैं......

ओरियन्ट इलेक्ट्रिक बल्ब प्लान्ट ..... ***वी जी इन्डस्ट्रीयल*** से अब ***अनिल रबड़*** में जहाँ तीन महीने में निकाल देते हैं..... दो बार सड़क पर एक्सीडेन्ट में घायल ***एस्कोर्ट्स*** वरकर : परमानेन्ट मजदूर अब बचे ही कहाँ हैं । नेता खा गये । हमें यह बन्दी मार रही है — हदबन्दी , डोल बन्दी , मजहब बन्दी , जात बन्दी...... ड्युटी जा रहों के संग रात 12 घण्टे ड्युटी कर लौट रहा ***सुपर ऑटो*** (80 सैक्टर-6, फरीदाबाद) फैक्ट्री मजदूर ने बताया : अप्रैल में एक दिन दोनों शिफ्टों ने काम बन्द किया तब आश्वासन दिया था । मई में तीन दिन उत्पादन बन्द किया , 9-10-11 मई को दोनों शिफ्टों में वरकर आराम से फैक्ट्री के अन्दर बैठे रहे । साहब ग्रेड देने की कोशिश कर रहे हैं..... जल्दी में ***ग्रुप फोर*** गार्ड : फरीदाबाद में हम 15 ने मिल कर कदम उठाये थे , असर पड़ा था , लेकिन एक संस्था खोले और पहले जी 4 एस में रहे बन्दे के चक्कर में सब गड़बड़ा गया.....

व्हाट्सएप पर ***ओप्पो मोबाइल*** (सैक्टर-63 नोएडा) वरकर : बहुत गन्दे माहौल के कारण नौकरी छोड़ दी । मैनेजमेन्ट कहे कि आज दो घण्टे ज्यादा काम करना है तो करना पड़ेगा । बेंगलुरू जा रहा हूँ.... 91 सैक्टर-25 , फरीदाबाद से ***वीनस*** फैक्ट्री मजदूर : वर्षों से टेम्परेरी वरकर हैं । एक केन्द्रीय यूनियन है । चन्दा भी लेती है टेम्परेरी वरकरों से । मैनेजमेन्ट से एग्रीमेन्ट का समय होता है तब यूनियन लीडर टेम्परेरी वरकरों को भाई-भाई कहते हैं और फिर , तुम कौन हो ? ...... 12 सैक्टर-5 , आई एम टी मानेसर से ***वीएक्सेस*** मजदूर : ओवर टाइम सिंगल रेट से देते हैं और दस्तावेज में दुगुनी दर दिखाते हैं । एच आर वाले कहते हैं यह कम्पनी का नियम है । इन्टरनेट पर मजदूर पी एफ चेक करते हैं तो वहाँ कुछ नहीं दिखाते । पी एफ जमा नहीं कर रहे......

बूँदा-बाँदी के बाद ड्युटी जाने वालों की रफ्तार कुछ और तेज..... ***कलमकारी*** (383 उद्योग विहार फेज-2 , गुड़गाँव) फैक्ट्री वरकर : शौचालय में कभी पानी रहता है , कभी पानी नहीं रहता..... ***ऋचा एण्ड कम्पनी*** (192 उद्योग विहार फेज-1) 23 और 24 मई को बायर आये तब दोनों दिन आठ हजार तनखा वालों की छुट्टी कर दी (बिना दिहाड़ी के) और दस हजार तनखा वाले काम करते रहे..... थोड़ी फुरसत में ***ओरियन कॉनमर्क्स*** (90 उद्योग विहार फेज-1) लेदर वरकर : फैक्ट्री में 600 मजदूर बन्धुआ की तरह हैं । फैक्ट्री के अन्दर जाने के बाद बाहर निकलने देना कम्पनी की मर्जी । रोज सुबह साढे नौ बजे से रात सवा तीन बजे तक काम, रविवार को साँय 6 , रात 9 बजे तक । फुडिंग के 100 रुपये पर जिस दिन रात 11 बजे छोड़ते हैं तब 50 रुपये । ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से । पागल हो जाते हैं , कई वरकर बेहोश हो कर गिर जाते हैं । पन्द्रह दिन में बैंक खातों में तनखा, ओवर टाइम , फुडिंग के पैसे अलग-अलग करके भेजते हैं । एम डी , मैंगो , टिम्बरलैण्ड बायर हैं । मैनेजमेन्ट कहती है कि बायर पूछें तो ओवर टाइम 2 घण्टे तथा भुगतान दुगुनी दर से बताना । पिछले वर्ष हम ने तीन दिन काम बन्द किया था पर बात बनी नहीं , 20-30 जो लाइट में आये उन्हें निकाल दिया..... कुछ देर से साथियों से चर्चा कर रहे , छुट्टी किये दो मजदूर बोले : ***गौरव इन्टरनेशनल*** (208 उद्योग विहार फेज-1) फैक्ट्री में होली से पहले की बात है । घण्टे में 40 पीस की जगह 55 पीस के लिये प्रोडक्शन इन्चार्ज ने गाली दी । उल्टी गाली पर मारपीट हो गई । मजदूरों ने प्रोडक्शन इन्चार्ज की धुनाई कर दी । तब से साहबों द्वारा गाली देना बन्द है । गौरव इन्टरनेशनल की 411 उद्योग विहार फेज-3 फैक्ट्री में गालीगलौज बहुत ज्यादा है , वहाँ भी लड़ाई होगी , कभी भी । लड़ाई का कारण टरगेट बढाना । प्रोडक्शन में कम्पनी स्वयं रखती है और 7 महीने में ब्रेक । आजकल डबल-ट्रिपल नाइट हो जाती है : सुबह 9½ से अगली सुबह 6 बजे तक काम करो, फैक्ट्री में ही सो जाओ , 9½ बजे कार्ड पंच कर फिर काम में लग जाओ । महीने में 180-250 घण्टे ओवर टाइम । तबीयत खराब होनी ही है । कम्पनी फुडिंग का एक पैसा नहीं देती । प्रोडक्शन में महिला मजदूरों को रात 10 बजे तक छोड़ देते हैं । फिनिशिंग में वरकर ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखते हैं । फिनिशिंग में इस समय 250-300 घण्टे महीने में ओवर टाइम......

अनु ऑटो (52 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री से शनिवार, 27 मई को 50 महिला मजदूरों का ब्रेक किया और हँगामें के डर से सोमवार को उन 50 को फिर भर्ती कर लिया । अनु ऑटो में 300 महिला वरकर हैं पर ई एस आई कार्ड एक को भी नहीं दिया है ..... ***प्योगिनम एक्सपोर्ट*** (268 सैक्टर-7, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में धागा कटिंग के लिये रखी 50

(शेष पेज तीन पर)

म्यांमार (बर्मा) में

म्यांमार में 2011 से पुरानी राजधानी यांगोन (रंगून) के निकट गारमेन्ट फैक्ट्रियाँ तेजी से बढी हैं। निर्यात 2010 से 2014 के बीच पाँच गुणा बढा। फैक्ट्रियों में नब्बे प्रतिशत वरकर महिला मजदूर हैं। दो लाख वरकरों की चाणचक्क हड़तालों की तीन लहरें 2015 तक उभर चुकी थी। मजदूरों को नियंत्रित करने के लिये सरकार ने 2011 में यूनियनें लीगल की। और, समझौता वार्ताओं के अखाड़े में मजदूरों को खींच कर कन्ट्रोल करने के लिये यूनियनें प्रयासरत हैं। लेकिन यूनियनों पर वरकर विश्वास नहीं करते, बल्कि अविश्वास करते हैं। इधर 23 फरवरी 2017 को हाँगझाऊ हन्डरेड-टैक्स गारमेन्ट फैक्ट्री पर मजदूरों ने आक्रमण किया। गाड़ियाँ तोड़ी, शीशे तोड़े, मशीनें तोड़ी, मैनेजर की धुनाई की और 7 सुपरवाइजरों को पकड़ लिया। चीन सरकार के दूतावास के हस्तक्षेप पर पुलिस ने मजदूरों पर हमला कर सुपरवाइजरों को छुड़ाया।

(एक मित्र ने इन्टरनेट पर लिबकॉम की साइट से सामग्री जुटाई।)

निशाना नहीं बनना

✶ कई वर्ष पहले की बात है। तब मैं ***गौरव इन्टरनेशनल*** (506 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव) फैक्ट्री में काम करता था। औरतों को टोकन दे कर बाथरूम से दो मिनट में आने को कहते। टोकन तोड़ कर फेंकने में मैं आगे रहा। एक को जबरदस्ती निकाल रहे थे। मैंने एतराज किया। झूठ बोले कि उसे काम करना नहीं आता। बाद में उससे जबरन इस्तीफा लिखवाया। इस पर हम 700 वरकर फैक्ट्री से निकले। उद्योग विहार थाने गये पर पैसों के जोर ने वहाँ रफादफा कर दिया तो हम गुड़गाँव थाने गये। कोर्ट गये। पैसे एकत्र कर वकील को 50 हजार रुपये दिये पर उसने कुछ नहीं किया। जज पर भी पैसों का जोर चला। एक हफ्ते 700 मजदूर फैक्ट्री से बाहर रहे। ऐसे में भी मैं डटा रहा। लेकिन दलदल में धँसते जाने की बजाय कारीगर पीछे हटे। तब मैंने खुद अपना इस्तीफा लिख दिया।

✶ ***मैक्सशॉप*** (10, 27 सैक्टर-6, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 600 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम। दुगुनी दर से ओवर टाइम के लिये आपस में चर्चा शुरू की। मीटिंगें करने ही लगे थे। एच आर वालों ने कुछ अपने बन्दे भर्ती किये थे, वे मीटिंगों में पहुँचे, और उन्होंने खुफियागिरी की। मैनेजमेन्ट को निशाना मिला। तब कम्पनी ने 50 को निशाना बनाया और इधर मार्च में 15 दिन में हम 50 को निकाला। पहले एक-एक, दो-दो करके निकाले और फिर एक रोज 10 को एच आर विभाग में बुलाया। दस को फैक्ट्री से बाहर किया जहाँ बाउन्सर थे। गाड़ियों में इधर-उधर ले गये और जबरन इस्तीफे लिखवाये।

भरोसे के लोगों के बीच काफी समय से चर्चायें कर रहे थे। बातें फैलती थी। कम्पनी पर दबाव डालने में सफल होते थे। कोई निशाना नहीं बनता था। मैनेजमेन्ट को आक्रमण के लिये टारगेट नहीं मिलता था। मीटिंगों ने सब गड़बड़ा दिया। मैनेजमेन्ट के लिये मीटिंग आसानी से चिन्हित करने का जरिया है। कम्पनी के बन्दे मीटिंग में फोन से वीडियो तक बना लेते हैं। ऐसा बेलसोनिका और ट्रैक कम्पोनेन्ट्स में भी हुआ था।

भरोसे के लोगों के जोड़ बड़ी सँख्या के बीच तालमेल बढाने के सहज, सरल, आसान तरीके लगते हैं।

कई बातें .... (पेज दो का शेष)

महिला मजदूर काम नहीं होता तब टेबल के नीचे सो जाती हैं। सुपरवाइजर मना करता रहता है पर कोई नहीं सुनती, सब सो जाती हैं...... गुड़गाँव रेलवे स्टेशन से ***जे एन एस*** (4 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री की बस में 98 लड़कियाँ, खूब भीड़, दरवाजे पर खड़ी होती हैं.....

केबल बनाने वाली ***स्काईटोन इलेक्ट्रिक*** (42-43 इन्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदाबाद) फैक्ट्री में 10 मई से उत्पादन बन्द....... ***महारानी पेन्ट्स*** वरकर : इस एक को 50 मजदूर पढेंगे.....***झालानी इम्पैक्स*** (21ए इन्डस्ट्रीयल एरिया) फैक्ट्री में एक डायरेक्टर ने 9 मई को सुपरवाइजर के थप्पड़ मारे..... ***गुडईयर टायर*** में ओवर टाइम बन्द करने पर कई मजदूर छोड़ गये हैं, कम्पनी महीने में पूरी उपस्थिति पर 1500 रुपये देगी..... ***कॉन्टिनेन्टल प्रोफाइल्स*** (10 सैक्टर-6, फरीदाबाद) फैक्ट्री में ओखला से प्लेटिंग प्लान्ट आया है और निकल प्लेटिंग में बहुत बुरा केमिकल का काम है, पूरे शरीर पर फुन्सी हो जाती हैं, मजदूर छोड़ते रहते हैं। यहीं ***टार्क मोटर*** में 30 वरकर 5 से 300 किलो की मोटरें ***लिम्टोर्क (इं.) लि.*** के लिये बनाते हैं, ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं, 8 घण्टे के मात्र 270 रुपये..... ***मंगला ट्युब*** (9 एफ सैक्टर-6) फैक्ट्री में 4-5000 चेक से और 4-5000 नकद देते हैं। पूरे महीने काम होता है पर हाजरी 10-15 दिखाते हैं, ई एस आई तथा पी एफ के 500 रुपये काटते हैं.....

ग्रेट इंडिया पावर केबल्स (63 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में उँगली कटने अथवा जलने पर ई एस आई, 100 वरकरों में 10-12 की है। तीसों दिन 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट, 15 दिन में शिफ्ट बदलने के समय नाइट वाले 24 घण्टे काम करते हैं। यहाँ नाइट लगाने का मतलब है लगातार 36 घण्टे काम और इनकार पर 2-4 दिन गेट बन्द। नोटबन्दी के बाद कागज सब से लिये पर बैंक खाते 7 वरकरों के ही खुलवाये। तनखा सब मजदूरों को नकद और अप्रैल की 17 मई तक नहीं। गार्ड रूम में दो बड़े कुत्ते...... ***ग्रोवर सन्स*** (135 सैक्टर-4) फैक्ट्री में बैंक खाते सब मजदूरों के खुलवाये हैं पर अप्रैल की तनखा भी आधे वरकरों की ही बैंक भेजी। जनवरी से देंगे, फरवरी से, मार्च से, अप्रैल से, अब कहते हैं मई से ग्रेड देंगे। नकद वालों की तनखा 6000-6500 रुपये। मजदूर 16 मई को ओवर टाइम पर नहीं रुके..... ***एटेक*** (61 सैक्टर-3) फैक्ट्री में 30 सवेतन छुट्टियाँ जमा करते हैं, 30 जमा होने के बाद जो बचेंगी वो देंगे। कभी 10-10 तो कभी 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। ओवर टाइम सिंगल रेट से **(शेष पेज चार पर)**

साझेदारी

✶ मजदूर समाचार की 15-16-17 हजार प्रतियाँ छापते हैं। आई एम टी मानेसर, उद्योग विहार गुड़गाँव, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फरीदाबाद में मजदूर समाचार का वितरण हर महीने होता है। दिल्ली के इर्द-गिर्द के औद्योगिक क्षेत्रों में मजदूर समाचार की बीस हजार प्रतियाँ प्रतिमाह आवश्यक लगती हैं। बाँटने में अधिक लोगों की साझेदारी के बिना यह नहीं हो सकेगा। सहकर्मियों-पड़ोसियों-मित्रों-साथियों को देने के लिये 10-20-50 प्रतियाँ हर महीने लीजिये और मजदूर समाचार के वितरण में साझेदार बनिये।

✶ मजदूर समाचार के वितरण के दौरान फुरसत से बातचीत मुश्किल रहती है। इसलिये मिलने-बातचीत के लिये पहले ही सूचना देने का सिलसिला आरम्भ किया है। चाहें तो अपनी बातें लिख कर ला सकते हैं, चाहें तो समय निकाल कर बात कर सकते हैं, चाहें तो दोनों कर सकते हैं।

— शुक्रवार, 30 जून को सुबह 6 बजे से 9½ तक आई एम टी मानेसर में सैक्टर-3 में बिजली सब-स्टेशन के पास मिलेंगे। खोह गाँव की तरफ से आई एम टी में प्रवेश करते ही यह स्थान है। जे एन एस फैक्ट्री पर कट वाला रोड़ वहाँ गया है।

— उद्योग विहार, गुड़गाँव में फेज -1 में पीर बाबा रोड़ पर वोडाफोन बिल्डिंग के पास वीरवार, 29 जून को सुबह 7 से 10 बजे तक बातचीत के लिये रहेंगे। यह जगह पेड़ के नीचे चाय की दुकान के सामने है।

— शनिवार, 1 जुलाई को सुबह 7 से 10 बजे तक चर्चा के लिये ओखला-सरिता विहार रेलवे क्रॉसिंग (साइडिंग) पर उपलब्ध रहेंगे।

✶ फरीदाबाद में जून में हर रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

फोन नम्बर : 0129-6567014

व्हाट्सएप के लिये नम्बर : 9643246782

ई-मेल < majdoorsamachartalmel@gmail.com >

रात 9½ बस में

सवा नौ बजे छूटे। बस पकड़ी जिसमें रात में एक पुलिसवाले की ड्युटी रहती है। इसमें 12 घण्टे की ड्युटी से छूटे मजदूर होते हैं। हर दूसरे-तीसरे दिन बस में खूब चर्चायें हो जाती हैं।

शनिवार, 20 मई को बस में भीड़ थी। एक ने पूछा कि भई ये ओरेंज बसों की हड़ताल किसलिये है और कब तक चलेगी। इस पर दूसरे ने कहा: केजरीवाल ने सत्ता में आने पर ठेकेदारी खत्म कर सब वरकरों को परमानेन्ट करने की बात की थी, नहीं किया इसलिये इन बसों के ड्राइवर और कण्डक्टर हड़ताल पर हैं। तीसरा बोला: भाई, मोदी ने तुम्हारे खाते में पन्द्रह लाख डाल दिये क्या? तब पहले वाला बोला: मैं मुसलमान हूँ और यह हिन्दू है, इसके खाते में मोदी ने 15 लाख नहीं, बीस लाख डाले हैं और मेरे खाते में तो एक पैसा नहीं डाला। इतना कहते ही पूरी बस में आग की तरह चर्चा फैल गई: ऐसे ही लोग हिन्दू-मुसलमान करके दँगा करवाते हैं। बस में पीछे से आवाज आई: भई तुम्हें कितनी तनखा मिलती है? दस हजार। तो भई तुम्हें तो न्यूनतम वेतन भी नहीं मिलता। तब पाँचवीं आवाज: मैं समझ नहीं पा रहा कि तुम मोदी सपोर्टर हो कि केजवरीवाल सपोर्टर। भाई, न मोदी और न केजरीवाल सपोर्टर हूँ। बारह घण्टे रोज ड्युटी करता हूँ, खर्चा नहीं चलता। बीबी-बच्चे तो पल रहे होंगे! कहाँ पल रहे हैं? आठ बाई आठ के कमरे में रहता हूँ कहते हुये पूरी कहानी सुना डाली। सातवाँ बोला: अरे भई, यह नेता-वेता कोई काम नहीं आयेगा, यह सब बकवास करते हैं, हमें तो 12-14 घण्टे काम करके ही पेट भरना है। आठवाँ: तुम ने किस पार्टी को वोट दिया? दूसरा: मैंने तो किसी को नहीं दिया। तब आठवाँ: फिर आप न्यूनतम वेतन, सरकार, नेताओं की बात क्यों कर रहे हैं? ऐसी बातें ही तो हमारी जिन्दगी से निकल रही हैं, यह नहीं करें तो क्या करें।

स्टैण्ड आते, लोग उतरते, गोविन्दपुरी में काफी उतर गये। ओरेंज बसों की हड़ताल क्यों और कब तक से चर्चा छेड़ने वाला बस से उतर कर बोला: मोदी-योगी-केजरीवाल तो गये!

(ओरेंज बस ड्राइवरों और कण्डक्टरों की हड़ताल दिल्ली सरकार द्वारा 3 मार्च से निर्धारित न्यूनतम वेतन नहीं दिये जाने के विरोध में थी।)

MESL अनुभव

24 अप्रैल को फैक्ट्री पहुँचे तो बेगमपुर खटोला, जयपुर मार्ग, गुड़गाँव स्थित ***मार्क एग्जास्ट सिस्टम्स लिमिटेड*** मैनेजमेन्ट ने ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 500 मजदूरों को ड्युटी पर नहीं लिया। बाहर किये इन वरकरों से मई में तीन रोज हमारी बाचीतें हुई और व्हाट्सएप पर सम्पर्क रहा है। यह मजदूर 5 जून को भी फैक्ट्री के बाहर थे।

1993 में मारुति की हिस्सेदारी में संयुक्त उपक्रम के तौर पर MESL की स्थापना हुई। आज कम्पनी की सात फैक्ट्रियाँ हैं।

2001 से बेगमपुर खटोला फैक्ट्री में यूनियन, 82 परमानेन्ट मजदूर सदस्य। वर्ष के आरम्भ में यूनियन का चुनाव और नये नेताओं द्वारा मैनेजमेन्ट से वेतन वृद्धि का समझौता। एग्रीमेन्ट के लिये जब दबाव बनाना होता है तब टेम्परेरी वरकरों को आगे करके यूनियन लीडर काम बन्द करवा देते हैं, एक-दो घण्टे बाहर बैठा देते हैं, कैन्टीन बन्द करवा देते हैं। इस प्रकार जनवरी 2016 से उत्पादन 100 की जगह 150 पीस करने पर परमानेन्ट मजदूरों के प्रोडक्शन इन्सेन्टिव में 2500 रुपये की वृद्धि। नया बोझ टेम्परेरी वरकरों पर और उनका एक पैसा नहीं बढाया। परमानेन्ट मजदूर ना के बराबर उत्पादन करते हैं, वे टेम्परेरी वरकरों से काम करवाते हैं। परमानेन्ट मजदूरों की तनखा 60-70 हजार रुपये है। टेम्परेरी में हैल्पर की तनखा 8280 रुपये और वैल्डर की 8676 रुपये।

MESL में 15 वर्ष से अधिक समय से काम कर रहे मजदूर भी टेम्परेरी वरकर हैं। दिवाली पर 2016 में बोनस मात्र 3500-4000 रुपये दिया। टेम्परेरी वरकरों ने यूनियन बनाने का तय किया। दिसम्बर 2016 में 7 वरकर एक केन्द्रीय यूनियन के जिला स्तर लीडर से मिले। सदस्यता के 110 रुपये प्रत्येक के हिसाब से नेता ने 500 मजदूरों से पैसे लिये। और शीघ्र ही '' मार्क एग्जास्ट ठेका श्रमिक संगठन'', रजिस्ट्रेशन नम्बर 2045 के कागज आ गये। टेम्परेरी वरकरों के लीगल एडवाइजर बने केन्द्रीय यूनियन के नेता ने फिर कुछ दिन बाद मजदूरों को बताया कि रजिस्ट्रेशन कैन्सल हो गया है। और, अब केन्द्रीय यूनियन का वह लीडर मार्क एग्जास्ट मैनेजमेन्ट का लीगल एडवाइजर है।

रजिस्ट्रेशन कागजों में 26 टेम्परेरी वरकरों के नाम थे। परमानेन्ट मजदूरों की यूनियन के प्रधान ने उन पर डोरे डाले पर वे 26 काबू में नहीं आये। मार्क एग्जास्ट मैनेजमेन्ट ने माल स्टॉक करने के लिये ओवर टाइम बढाया, महीने में 25-50 की जगह 80-100 घण्टे किया। फिर 24 अप्रैल को 500 टेम्परेरी वरकर बाहर किये। और, 24 अप्रैल से 82 परमानेन्ट मजदूरों के संग स्टाफ के 150 लोग ट्रॉली खींच रहे हैं — पहले एसी में बैठे रहते थे। करीब 200 नये मजदूर भर्ती और 24 अप्रैल से फैक्ट्री में उत्पादन जारी है।

मार्क एग्जास्ट मैनेजमेन्ट पहले ही फैक्ट्री गेट से 200 मीटर दूर का स्टे अदालत से ले आई थी जिसका पता टेम्परेरी वरकरों को 24 अप्रैल को लगा। पुलिस। दूर तम्बू के लिये छत्रछाया दूसरी केन्द्रीय यूनियन के एक लीडर ने प्रदान की और वे श्रम विभाग में पैरवी करने लगे।

बाहर किये 500 मजदूरों के पास ठेकेदार कम्पनियों के पत्र आने लगे। किसी पत्र में 24 अप्रैल से बिना बताये अनुपस्थिति का जिक्र। किसी पत्र में 31 मार्च को ठेका समाप्ति की चर्चा के बाद कर्नाटक में बेंगलुरू ट्रान्सफर की बात। और श्रम विभाग में तारीख पर तारीख।

दूसरी केन्द्रीय यूनियन के बुलावे पर अलग-अलग फैक्ट्रियों के यूनियन लीडर मार्क एग्जास्ट के 500 वरकरों को भाषण देने आने लगे। यह नेता फैक्ट्री स्तर पर मार्क एग्जास्ट फैक्ट्री में काम जारी रखे यूनियन लीडरों के हूबहू। खैर। छपवा कर पर्चे बाँटें। और, 29-30 मई को केन्दीय यूनियन के वार्षिक अनुष्ठान में शामिल हो कर, जिला प्रशासन कार्यालय के सम्मुख भूख हड़ताल और धरना को मार्क एग्जास्ट के 500 मजदूरों ने सफल बनाया।

श्रम विभाग में 11 मई के बाद 19 मई की तारीख और फिर 23, 29, 31 की तारीख। फाइनल तारीख बताया था 31 मई को। और, 31 को मैनेजमेन्ट के लोग बीमार हो गये — 5 जून की तारीख। फिर 8 जून की तारीख..... मार्क एग्जास्ट कम्पनी ने मार्च माह के ओवर टाइम के पैसे और अप्रैल के 23 दिनों की तनखा तथा ओवर टाइम के पैसे 5 जून तक 500 टेम्परेरी वरकरों के खातों में नहीं भेजे थे — मैनेजमेन्ट श्रम विभाग में एक-दो दिन में भेज देने की कहती रही हैं।

कई बातें.......

(पेज तीन का शेष)

जय उशिन (4 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में मई में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। जबरन 12 घण्टे रोकते हैं..... ***जे एन एस*** में ओवर टाइम 80 रुपये प्रति घण्टा की बजाय 68 रुपये देते हैं। जो 15 मार्च के बाद भर्ती हुई हैं उन्हें शिफ्ट अलाउन्स के 650 रुपये नहीं। जो बस से नहीं आते-जाते उन्हें कनवेयन्स के 650 रुपये नहीं देते.... ***ब्रिजस्टोन*** (11 सैक्टर-3) फैक्ट्री में मेन बीमारी गाली है। महीने में 150-184 घण्टे ओवर टाइम, सिंगल रेट से। एक से तीन मशीनें चलवाते हैं, सुपरवाइजर बहुत ज्यादा चिल्लाते हैं। जापान से 29 मई को 2015 में हुई मृत्यु पर साहब पिछले वर्ष की तरह आया है लेकिन गालियों पर साहब का कोई असर नहीं.........

और जिन 35 वरकरों की तनखा 18,000 से ऊपर है उन्हें ओवर टाइम के पैसे नहीं........ ***मिलिट्री नर्सरी***, मानेसर में नई ठेकेदार कम्पनी ने 170 महिला मजदूरों से कहा है कि 8 घण्टे के 300 रुपये और रविवार को अवकाश देंगे......... आई एम टी मानेसर के इर्द-गिर्द के गाँवों में भी अस्सी प्रतिशत मकान मालिकों ने दुकान खोल रखी हैं और किरायेदारों पर राशन तथा गैस उन्हीं की दुकान से लेना थोपते हैं....... सैक्टर-3 में केन्द्र सरकार की सँस्था आईकैट और हरियाणा सरकार के पावर हाउस के बीच नाले में खाली किये जा रहे सेप्टीक टैंक से भारी बदबू। शिकायतों के बावजूद HSIIDC कुछ नहीं कर रही......

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/15-17
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।